आपने लिखा

मैं बी.एस.सी. तृतीय वर्ष (प्राणिशास्त्र) का छात्र हूं। फिलहाल परीक्षाफल की प्रतीक्षा कर रहा हूं। भविष्य में जेनेटिक इंजीनियरिंग में शोधकार्य की आकांक्षा रखता हूं।

विज्ञान का विद्यार्थी होने के नाते विज्ञान के जन-सामान्य में प्रचार-प्रसार में दिलचस्पी रखता हूं। इसके अलावा इतिहास के अध्ययन में भी गहरी रुचि है। दुखद बात यह है कि मैं हाल तक आपकी पत्रिका संदर्भ से नावाकिफ था। अभी कुछ दिन पहले ही एक कबाड़ी के पास से मुझे संदर्भ के सितंबर-अक्टूबर 1999 से लेकर अक्टूबर-नवम्बर 2000 तक के कुछ अंक मिले। इस प्रकार मेरे पास छह अंकों का एक छोटा-सा संग्रह तैयार हो गया है। मैंने इसके सारे लेख और कथाएं काफी चाव से पढ़े हैं। इसमें गंभीर वैज्ञानिक तथ्यों को काफी सरल और रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही ये तथ्यपरक हैं और इनके आंकड़े भी विश्वसनीय स्रोतों से लिए गए हैं। इसके अलावा ऐतिहासिक और सामाजिक मसलों पर भी स्तरीय लेखकों के विचारों से रूबरू होने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

आपको पत्र लिखने का विशेष कारण इसी प्रकार का एक लेख है। 'संदर्भ' के अगस्त-सितम्बर 2000 और अक्टूबर-नवम्बर 2000 के अंकों में रिचर्ड ईटन द्वारा लिखित और रमेशचन्द्र बरगले एवं गौतम पांडेय द्वारा अनूदित लेख 'बंगाल में इस्लाम का फैलना' पढ़ने को मिला। पढ़कर काफी प्रभावित हुआ। ईटन साहब के इस लेख द्वारा जनसामान्य की धार्मिक भावनाओं से जुड़ी बहुत-सी भ्रांतियों का निराकरण किया गया है। खासकर बंगाल के इस्लामीकरण में तलवार-सिद्धान्त के अमान्य सिद्ध हो जाने से, जनसाधारण में युगों से एक समुदाय-विशेष के प्रति व्याप्त पारम्परिक और निराधार भय की भावना को दूर करने में इस लेख से महत्ती सहायता मिलने की आशा है। यह तथ्यों और आंकड़ों पर आधारित एक प्रामाणिक लेख है। मैंने दोनों अंकों में इसका सम्पूर्ण अध्ययन किया है परन्तु अक्टूबर-नवम्बर 2000 वाले अंक में इस लेख के आगे के अंकों में जारी रहने की बात कही गई है जिससे मैं इसका पूरा अध्ययन करने से वंचित रह गया, जो कि काफी अफसोस जनक है।

'संदर्भ' पत्रिका किसी भी बुक-स्टॉल या पुस्तकालय में मुझे नहीं मिली। अतः मैंने आपसे सीधा संपर्क करना उचित जाना। आपसे दरख्वास्त है कि संदर्भ के जिन अंकों में उपरोक्त लेख आगे छापा गया था, मुझे डाक द्वारा भिजवाने का कष्ट करें। साथ ही 'संदर्भ' का एक वर्तमान अंक भी भिजवाएं ताकि वर्तमान निर्धारित मूल्य के अनुसार सदस्यता-शुल्क चुकाकर इस पत्रिका का नियमित पाठक बन सकूं। मैं आपको वी.पी.पी. छुड़ा लेने का वचन देता हूं। यदि संदर्भ के उपर्युक्त पुराने अंक उपलब्ध न हों तो कृपया अपने आगामी अंक में मेरी यह अपील प्रकाशित कर देंगे जिससे संदर्भ के पुराने और नियमित पाठक-बंधु मेरी मदद कर सकें जिसके लिए मैं उनका और आपका सदैव शुक्रगुज़ार बना रहूंगा। अब लेखनी बन्द करता हूं इस विश्वास के साथ कि संदर्भ

निकट भविष्य में सफलता की नई ऊंचाइयां छुएगी। यदि संभव हो तो पत्र का उत्तर दीजिएगा।

शुभेन्दु रॉय
सकरीगली, साहिबगंज, झारखंड

संदर्भ के अधिकतर अंक सजिल्द संस्करणों के रूप में मौजूद हैं जिनमें विषयवार इंडेक्स भी दिया जाता है ताकि रेफरेन्स में आसानी हो।
-- संपादक मंडल

शैक्षणिक संदर्भ विद्यालय की पाठ्य सामग्री के इतर भी विषय को गहराई से प्रस्तुत करने की अनूठी पत्रिका है। यथा पृथ्वी के अक्षीय झुकाव की स्थिति आज से 11,000 साल पूर्व किस प्रकार भिन्न थी (शैक्षणिक संदर्भ अंक 22-23), गोल चुम्बक के धुव्रों का दिशा सूचक की सुइयों के साथ स्पर्शी व्यवहार (शैक्षणिक संदर्भ अंक 29) जैसी जानकारियां विद्यालयों की पाठ्य सामग्री में कम ही मिल पाती हैं। जबकि वास्तव में एक जिज्ञासु के लिए ऐसी जानकारियां ही महत्वपूर्ण होती हैं।

इसी क्रम में अंक 56 में प्रकाशित सुशील जोशी का विवेचनात्मक लेख एवोगैड्रो संख्या पढ़ने का मौका मिला। विद्यालयों की पाठ्य सामग्री में सिर्फ इसके मान का उल्लेख रहता है। एक छोटा-सा सवाल मुझे भी परेशान कर रहा है -

वे कौन-से कारक अथवा यांत्रिकी है जो सामान्य ताप एवं दाब पर गैस के एक मोल के लिए एवोगैड्रो संख्या का मान स्थिर रखते हैं जो कि गैस विशेष के अणु के आयतन व भार पर निर्भर नहीं करता? क्या इसका उत्तर सामान्य ताप व दाब किस प्रकार निर्मित होता है, में निहित है?

नंदा बल्लभ पंत
ग्राम सिल्ली, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

कुछ दिन पहले आपसे फोन पर बात करके बेहद अच्छा लगा। कुछ साल पहले मई 1997 में उदयपुर में एक कार्यशाला के दौरान संदर्भ पत्रिका से मेरा पहला परिचय हुआ था। तब से संदर्भ का पाठक बना हुआ हूं। वर्तमान समय मैं विद्यालय में गणित विषय का व्याख्याता हूं।

मैंने पहले भी संदर्भ के लिए एक सुझाव भेजा था जो पुनः लिख रहा हूं कि शिक्षा में तथा अन्य विषयों में रिसर्च के दौरान किस तरह के अनुभव होते हैं उन पर ृंखला प्रारंभ करें। ऐसा एक लेख - 'समय विहीन माहौल में.....' आप काफी पहले प्रकाशित कर चुके हैं।

हनुमान सहाय शर्मा
शाहपुरा, भीलवाड़ा, राजस्थान

अंक न मिलने संबंधी शिकायती खत भेजने के बाद मुझे अंक 55 प्राप्त हुआ। अभी मैंने लेखों का पूर्ण अध्ययन नहीं किया है किन्तु 'प्लूटो के छियत्तर साल' लेख तो एकदम समसामयिक विषय पर था। इस लेख के लिए धन्यवाद देता हूं। आप से अनुरोध है कि आप प्रकाश पर भी एक विस्तृत लेख प्रकाशित कीजिए।

शिवचन्द्र प्रजापति
देवरिया, उत्तर प्रदेश

आशा है सकुशल होंगे। संदर्भ का अंक 56 मिला। पत्रिका समय पर मिल जाती है पर कुछ अंक विलम्बित हो जाते हैं।

फिलहाल अंक 56 में एक लेख प्रकाशित हुआ है ककड़ी कड़वी क्यों। इस लेख की शुरुआत में आपने रहीम का एक दोहा दिया था।

दरअसल रहीम का यह दोहा ठीक है परन्तु आपके लेख का शीर्षक गलत लगता है। खीरा कड़वा होता है, ककड़ी नहीं। खीरा और ककड़ी दो अलग-अलग प्रजातियां होती हैं। चित्र आपने ठीक दिया है। वहां खीरा ही है। ककड़ी खीरा से लम्बी पतली और कुछ ऐठी हुई होती है। इनका वैज्ञानिक जवाब तो मुझे नहीं पता पर पूरे देश में खीरा अन्य स्थानीय नामों के साथ हिन्दी में खीरा नाम से ही जाना जाता है। पत्रिका में कुछ भारतीय लेखकों की विज्ञान कथाएं भी दीजिए।

अमित कुमार
सिविल लाइंस, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

एकलव्य द्वारा प्रकाशित नियमित पत्रिकाएं

संदर्भ

स्रोत

चकमक

इन पत्रिकाओं के सदस्यता शुल्क, पुराने अंक, बाउंड वॉल्यूम के बारे में जानकारी हेतु संपर्क कीजिए।

एकलव्य, ई-7/ एच. आई. जी. 453,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र. 462016
फोन : 0755 - 2464824, 2463380
pitara@eklavya.in